कहानी

भूला हुआ एलबम

नीलमणि

रविवार की दोपहर थी. वर्मा परिवार में हमेशा की तरह शांति और आराम का माहौल था. रसोई से मसाला चाय और गरम समोसों की ख़ुशबू आ रही थी. खिड़की से धूप के किरणें पर्दों के बीच से झाँक रही थीं.

दादी मीरा अपनी पसंदीदा खिड़की के पास वाली कुर्सी पर बैठी थीं, हल्की मुस्कान के साथ. उनकी दस साल की पोती रिया पूरे घर में दौड़ती फिर रही थी.

दादी! मेरा टैबलेट का चार्जर कहाँ है? मिल नहीं रहा! रिया ने ऊँची आवाज़ में कहा.

मीरा मुस्कुराईं, आजकल के बच्चों को स्क्रीन बंद होने से ज़्यादा डर लगता है, जैसे कोई युद्ध होने वाला हो.

मैंने सुन लिया! रिया बोली और हँसती हुई दादी के पास आकर बैठ गई.

अच्छा है, सुन लिया. अब ये भी सुनो. दादी ने साइड टेबल के नीचे से एक पुराना, धूल से भरा चमड़े का एलबम निकाला. ये देखो, क्या मिला मुझे तुम्हारे पापा की पुरानी अलमारी में.

ये क्या है? कोई पुरानी बोरिंग किताब? रिया ने पूछा.

दादी ने नाटकीय ढंग से कहा, बोरिंग? इसमें वो कहानियाँ हैं जो तुम्हारे टैबलेट में भी नहीं मिलेंगी.

रिया ने जिज्ञासु नज़रों से एलबम खोला. पहले पन्ने पर एक छोटे लड़के की ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीर थी, जिसके हाथ में क्रिकेट का बैट था.

ये कौन है? रिया ने पूछा.

तुम्हारे पापा, जब वो तुम्हारी उम्र के थे. मीरा ने जवाब दिया.

ओह! पापा के बाल इतने फूले हुए थे? रिया ज़ोर से हँस पड़ी.

इसके बाद एक-एक तस्वीर के साथ कहानियाँ जुड़ती चली गईं. दादी की शादी की फोटो, पुराने घर की तस्वीरें, स्कूल का नाटक, गांव की पिकनिकज सब कुछ जैसे फिर से जीवित हो उठा.

रिया ने एक तस्वीर की ओर इशारा किया, जिसमें एक लड़की साड़ी पहनकर साइकिल चला रही थी.

ये सुपरवुमन कौन है?

ये मैं हूँ, दादी ने गर्व से कहा. तुम्हारे दादाजी ने मुझे साइकिल चलाना सिखाया था. दस बार गिरी, दोनों घुटनों में ख़रोंच आ गई थी, फिर भी सीखी.

आपने हार नहीं मानी? रिया हैरान थी.

नहीं. हमारे जमाने में %पॉज़% बटन नहीं हुआ करता था.

रिया कुछ देर चुप रही, फिर बोली, दादी, अब तो हम इतने सारे फोटो लेते हैं, पर ऐसे एलबम क्यों नहीं बनाते?

हम फोटो लेते हैं, पर रखते नहीं. ये एलबम हमारी यादों को सहेज कर रखता है.

उस शाम जब रिया के माता-पिता लौटे, वह दौड़ती हुई उनके पास गई.

मम्मी-पापा! देखो दादी ने क्या दिखाया! पापा कितने फनी लगते थे जब छोटे थे!

रिया के पापा रंजन हँस पड़े, ओह, नहीं! दादी ने वो लव लेटर वाली कहानी तो नहीं सुनाई?

सब बता दिया! रिया चहक रही थी.

पूरा परिवार बैठ गया, एलबम हाथों में था, और हँसी पूरे कमरे में गूंज रही थी. चुप रहने वाली माँ अंजलि भी एक पुरानी शादी की तस्वीर देखकर मुस्कुरा उठी.

मीरा सब देखती रही, आँखों में हल्की नमी, लेकिन दिल पूरी तरह भरा हुआ.

रात में रिया अपनी दादी के कमरे में एक कॉपी लेकर आई.

दादी, मुझे आपकी सारी कहानियाँ इस कॉपी में लिखनी हैं ताकि मैं कभी न भूलूँ.

मीरा ने सिर हिलाया, बस वादा करो, ज्यादा से ज्यादा समय स्क्रीन से दूर रहोगी.

रिया ने अपनी छोटी उँगली बढ़ाई, पिंकी प्रॉमिस.

उस दिन के बाद एक नई परंपरा शुरू हुई. हर रविवार को पूरा परिवार चाय और कहानियों के साथ एक फोटो और एक याद शेयर करता. रिया उन यादों को लिखती जाती. एक दिन बारिश हो रही थी. रिया खिड़की से बाहर देखती हुई बोली, अगर ये फोटो होती, तो मैं इसका नाम रखती - बरसात में गर्म एहसास.

मीरा मुस्कुराई और बोलीं-नई शुरुआत.

क्लास by बड़े भाई

क्या आप एक अच्छे मित्र हैं? इसे पढ़कर जाँचिए

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, द्वापर युग की एक मित्रता बड़ी चर्चित रही है और वो है कर्ण और दुर्योधन की मित्रता. दुनिया इनकी मित्रता के उदाहरण दिया करती है. कर्ण की दानवीरता के साथ उसकी मित्रता का भी खूब बखान किया जाता है लेकिन अभी मेरा उद्देश्य यह कथा बताना नही है क्योंकि इससे आप भलीभांति परिचित हैं बल्कि मेरा उद्देश्य आपको अच्छे मित्र का एक पहला गुण समझाना है जिस पर हम कभी गौर नही करते . इस कथा से आपको यह गुण बहुत अच्छे से समझ आ जाएगा.

छोटे भाई , कर्ण और दुर्योधन की मित्रता में देखें तो उसमें दो बातें निकलती हैं.. एक तो वो जो हममें होना चाहिए और दूसरा जो हममें नही होना चाहिए. चलिए, समझते हैं

जो हममें होना चाहिए वो है कर्ण की तरह मित्र दुर्योधन के प्रति समर्पण और प्रगाढ़ स्नेह. मित्र के प्रति हमारे मन में भी ऐसा ही भाव और विश्वास होना चाहिए और आपका साथ हर चुनौती भरे समय में उसके साथ होना चाहिए और जो नही होना चाहिए, वो है कर्ण की तरह मित्र के गलत उद्देश्य में भी उसका साथ होना. कर्ण की मित्रता में यह कमी सदैव दुर्योधन के गलत विचारों को पोषित करती रही. योगेश्वर श्रीकृष्ण ने कर्ण से कहा भी था कि उसकी मित्रता, दुर्योधन की ताकत है तो अगर वो उसको समझाए या उसका साथ न दे तो शायद दुर्योधन की आगे बढ़ने की हिम्मत न पड़ती और वो मित्रता टूटने के डर से विनाश की दिशा में नही जाता लेकिन कर्ण ने नही माना और फिर परिणाम क्या हुआ, हम सभी जानते हैं. बात समझ गये होंगे आप.

यह हमेशा ध्यान रखिये कि आपकी मित्रता उसके चुनौती भरे समय की मित्र हो, कभी उसके गलत कामों की नही वरना आप मित्र नही है बल्कि आप उसके वो दुश्मन हैं जो उसके साथ है और जिसे वो पहचान नही रहा है क्योंकि गलत उद्देश्य में उसको आपका साथ उसकी बर्बादी का कारण बन सकता है और मुझे नहीं लगता कि आप अपने मित्र के साथ ऐसा कुछ होने देना चाहेंगे.

छोटे भाई, बस इतना कहना चाहूंगा कि जब भी आप किसी के मित्र बनें या बनाएं तो पहली यह शर्त निश्चित कर लें और जैसे भी बनें यह कह दें किसी भी तरह कि 'मित्र तेरे बुरे वक्त में हमेशा साथ हूँ लेकिन तेरे गलत काम में कभी नही, मुझसे अपेक्षा न करना' विश्वास मानिए अगर उसे आपकी मित्रता प्यारी होगी तो वो कभी यह सीमा नही लाँघेगा.

सच कहता हूँ यारों, यह शर्त आपका और आपके मित्र का बहुत कुछ बिगड़ने से रोक देगी और ऐसा करके आप एक अच्छे मित्र का पहला कर्तव्य निभा चुके होंगे. बस इतना ही कहना था, धन्यवाद.

पुस्तक समीक्षा

स्त्रियों की व्यथा-कथा का जीवंत दस्तावेज

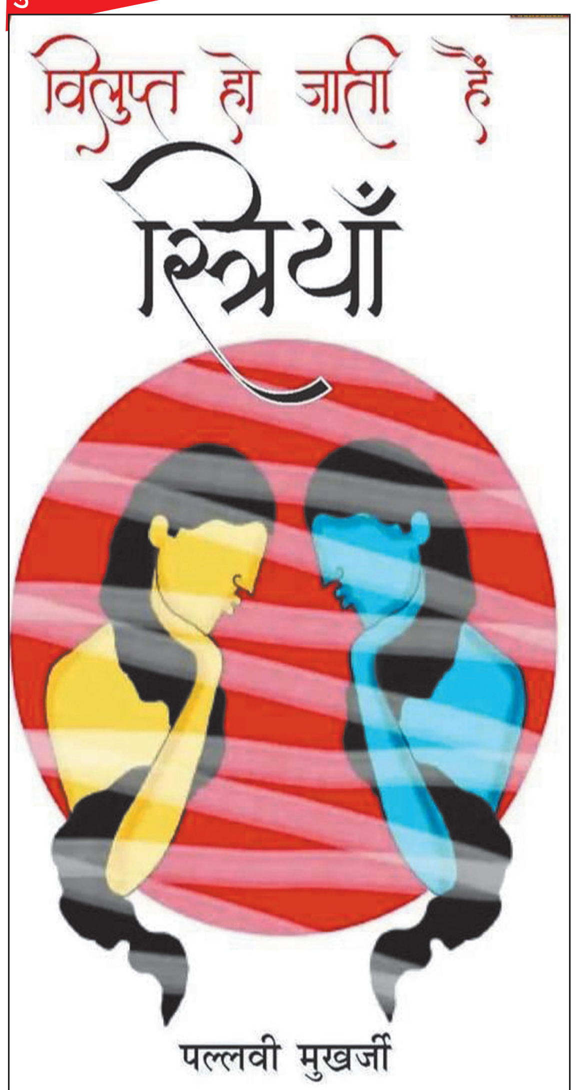

मुकेश तिरपुडे

नये बिम्ब, नये विचार नये भावबोध और मर्मस्पर्शी अनुभूतियों के साथ समकालीन हिन्दी कविता में पल्लवी मुखर्जी चर्चित है. साहित्यिक पत्रिकाओं में उनकी कविताओं का लंबे समय से लगातार प्रकाशन हो रहा है. समाज में पुरूषों व महिलाओं के बीच व्याप्त असमानताएँ और उससे मिलनें वाला गहरा असंतोष ही उल्लेखनीय कविताओं में व्यक्त हो रहा है. आज की महत्वपूर्ण कविताओं में महिला स्वरों की यह खास भूमिका और उपस्थिति हिन्दी में समकालीन कविता की खास पहचान बन गई है.

न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन नई दिल्ली से सद्य प्रकाशित काव्य संग्रह विलुप्त हो जाती है स्त्रियां में पल्लवी मुखर्जी ने महिलाओं के जीवन में हर तरह के शोषण को प्रभावी कविताओं के ज़रिए कहने का अच्छा प्रयास किया है.

प्रेम और करूणा के अनेकों बिम्बों को इन कविताओं में साकार करनें का पुरजोर प्रयास किया है. सत्ता में विराजमान व्यक्ति के मन में, एक सम्पन्न व्यक्ति के मन में निम्न व मध्यमवर्गीय व्यक्ति के लिए प्राय: गहरा असंतोष व नफरत का भाव भरा होता है, विकास के नाम पर निम्न व मध्यम वर्गीय व्यक्ति के समाज व गाँव को उजाड़ने के रूप में यह गहरा असंतोष व नफरत का भाव प्रमुखता से सामने आता है लेकिन छोटा व्यक्ति आगे बढ़ने के लिए कृत संकल्प है एक दिन बड़ा व्यक्ति छोटे व्यक्ति को अपने बराबर देखता है कविता उदास बस्ता में-%एक दिन / तुम मुझे देखोगे/ शीर्ष पर बैठे / उस दिन तुम्हे मेरे मनुष्य होनें पर / जरा भी संदेह नहीं होगा.

शहरी सभ्यता, शहरी संस्कृति के ढांचे में ढला हुआ व्यक्ति, कंक्रीट के जंगल में रहने वाला व्यक्ति आधुनिक उपभोक्तावाद का प्रतिनिधि है उसे सिर्फ अपनी तरक्की चाहिए इस तरह वह बहुत जल्दी दुनिया जहान से लगातार दूर होता जाता है. उसे अपनें आसपास के लोगों से, वातावरण व प्रकृति से कोई सरोकार नहीं है. कविता जंगल में कवयित्री ने एक ऐसे ही व्यक्ति से सवाल किया है कि--तुम कंक्रीट के बनें जंगलों में रहते हो माटी से कोसों दूर /जंगल के कराहनें की आवाज सुन रहे हो न तुम!

इस संग्रह में कवयित्री ने स्त्री जीवन और उसकी भावनाओं के दृश्यों को कविताओं में साकार किया है. अपनी कविता स्त्री और पृथ्वी में वह कहती है-स्त्री पृथ्वी है, जो घूमती जाती है. अपनी ही धूरी पर में जीवन की सार्थकता के लिए भोजन के महत्व को सिद्ध करती है. एक स्त्री के लिए भोजन पकाना उसका कार्य होता है. लेकिन देखा गया है कि घर के किसी भी व्यक्ति के लिए चाहे वह स्कूल पढ़ने वाली बच्चा ही क्यों न हो स्त्री के इस कठिन कार्य को कभी कोई तवज्जो नहीं दी जाती है. पुरुष प्रधान समाज में स्त्री का भोजन पकाना एक सर्वथा महत्वहीन कार्य माना जाता है और यदि स्त्री कामकाजी न हो तो एक स्त्री के लिए इसे कार्य भी नहीं माना जाता है सभी पुरूषों को आगाह करते हुए कवयित्री कहना चाहती है कि रोटी (भोजन) हर व्यक्ति के लिए बहुत जरूरी है यह संभव है कि रोटी (भोजन) के अभाव में एक तानाशाह भी मर सकता है. कविता तानाशाह की पंक्तियाँ हैं -एक तानाशाह भी / मर सकता है. एक भिखारी की तरह / अगर उसे रोटी न मिले

कवि की दृष्टि व्यापक है वह अपनें चारों ओर व्याप्त धन की व्यवस्था का काला सच देखकर मर्मान्तक पीड़ा को महसूस करती है. कविता मजदूर एक व दो में एक मजदूर की पीड़ा के पलों को अपने शब्दों में बहुत प्रभावी ढंग से व्यक्त किया है. कि किस तरह एक व्यक्ति अपने सपनों का महल खड़ा करता है. हर तरह की सुविधा की व्यवस्था करता है लेकिन वह किसी तरह मजदूर के कठिन परिश्रम का अंदाजा नहीं लगा पाता है कि वह कितना कठिन जीवन जीते हुए अपनें उम्मीदों के सपनों को जीवित रखता है.

कविता किसान कहती है कि %मैं आँगन में एक फूल पौधे सूखने पर दुखी होती हूँ जबकि एक किसान अपने खेतों की फसलों के झुलसनें या रोग से ग्रसित होनें पर स्वयं को चुपचाप समझाता है कि सब ठीक हो जाएगा. वह अपने सपनों के चिराग जलाये रखता है लेकिन एक दिन वह कर्ज के दबाव में फांसी के फन्दे तक पहुंच जाता है किसान का यह कृत्य हम सबके लिए शर्मनाक और दुर्भाग्यपूर्ण है.

जमाना बदल गया महिलाओं ने तमाम प्राचीन रूढ़ियों और रीति रिवाजों को तोड़कर अपनी सफलता का परचम लहराया हैं. जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की उपलब्धियों सराहनीय और प्रशंसनीय हैं लेकिन उसे हर जगह, हर दिन अपने जुझारूपन अपनी कर्मठता, धैर्यता व बहादुरी से अपनी जगह बनानी पड़ती है. कविता मूलमंत्र की पंक्तियां कवयित्री के जीवन अनुभवों का आईना है वह लिखती हैं--%स्त्री का जुझारूपन ही एक स्त्री के जीवन का मूलमंत्र है!

विलुप्त हो जाती हैं स्त्रियाँ (कविता संग्रह)
पल्लवी मुखर्जी
प्रथम संस्करण- वर्ष 2025
मूल्य-350 रुपये
न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली

गीत

जरा, बचपन में हो आएं

संजय उपाध्याय

जो भी दिल में आए, वो गाएं
चल, ज़रा बचपन में हो आएं

सर की धमक,पापा की डांट
मां का दुलार, दादी का लाड़
दादू की धौंस, कहाँ से लाएं

दीदी से, थोड़ा सा लड़ आएं
चल,ज़रा बचपन में हो आएं

यारों की टोली,शकर की गोली
टिफिन में पराठे,आलू, अचार
दोस्तों का प्यार, कहाँ से लाएं

स्कूल की पुलिया पर बैठ आएं
चल, ज़रा बचपन में हो आएं

कच्चे ओटले, कच्ची गालियां
बाड़े में रखे गेहूँ की रखवाली
बहानों की छुट्टियां कहां से लाएं

बाड़े में ही कुछ देर बैठ जाएं
चल, ज़रा बचपन में हो आएं

वो मोरसली के झाड़ पर एक
सांस में दौड़कर चढ़ने की शर्त
चोर पुलिस के खेल में दाम देना
वो सारे खिलाड़ी कहां से लाएं

अपनी गली में ज़रा खो जाएं
चल ज़रा बचपन में हो आएं

गिल्ली के शॉट, पतंग के पेंच
डोर की सुताई, मेदे की लाई
कंचे का ख़ज़ाना अब कहां से लाएं

उस छोटे पड़ गए मैदान में खो जाएं
चल ज़रा बचपन में हो आएं.

रे घिस्या, धरती धूजे कि डीजे बाजे...!

मालवी कोना

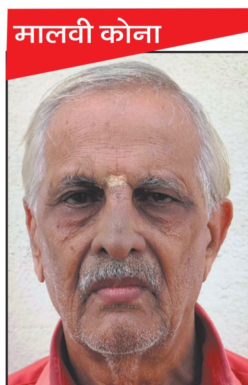

शिव शर्मा

घिस्या... रे ...घिस्या...!! या कंय धरती धूजी री रे.

अरे नी हो दायजी... धरती कां धूजी री, यो तो डीजे बाजी रियो. तमारे नी मालम कि गणपति उच्छ्व चली रियो है, वाँ की जगे यो डीजे बजी रियो है.

असो कांय को डीजे... इत्ती जोर से बाजे कि जणे धरती धूजे. सारो घर थर्रय रियो. देख खिड़की हुण का काँच धूजी रिया. ढोर का बाड़ा का खापरा तो नी गिरी जाय. म्हारा हिरदा में तो जाणे डम-डम बाजे.

घिस्या को नाम उका दादाजी की जीबान पर धरयो रे. भूख लगे चाहे प्यास लगे. भागीरथ बा अपणा बेटा-बहू से बात करने की जगे पोता घिस्या से ही बात करे. ऊ घिस्यो कम से कम बात को हुंकारो तो भरे. बेटा-बहू तो आधी बखत मुँह मचकोड़ी ने बायर निकली जाए.

अरे दायजी, तमने टिरक पे बन्ध्यो डीजे तो सुणियो यी नी अबी तक. जूलूस-बानो निकले तो सुण जो. कान का कीड़ा खीरी जाय है. ऊ तो असो लागे कि जाणे घर पड़ी रिया है. आदमी भीतर तक थर्रय जाय है. इत्तो य नी सुतली बम ने बड़ी-बड़ी लड़ असी छूटे कि कान गन्नय जाय.

ओ, थारी की. अरे घिस्या, गणपति उच्छव तो हमारा जमाना में होता था रे..! जिन दन से गणपति बैठता नी, उना ज दन से गम्मत चालू हुई जाती. गम्मत..! या कंय होय दायजी..?

अरे, पेटी-ढोलक ने मजीरा बस इन तीन साज का साथे 12-1 बजे रात तक भजन गाता, गाणे वाला तो पाँच-छह जणा ही रेता पण सुनने वाला आखा गाम का भेला हुय जाता. असो रस बरसतो कि पूछो य मत. पेटी पे धूलजी बा असो अलाप देता नी, कि आधा गाम में सुणय जातो. ने कुँवर जी बा की ढोलक की थाप की तो कंय केणी रे घिस्या..! उनकी थाप असी पड़ती कि बई-बेण हुण कदी रोटी बणाती नी तो उनका कडेला फूटी जाता.

कडेला कसे फूटी जाता दायजी ?

अरे, चूल्हा पे गारा-मिट्टी का कडेला पे ज्वांर की रोटी बणती थी नी तो ढोलक सुणते-सुणते वी असी थाप से रोटी कडेला पे पटकती कि वी फूटी जाता. गम्मत में भगत जी बा असी झाँझ की झनकार देता कि सुणता य रो..! मजो अय जातो रे भई मजो.

घिस्यो छटी में भणतो थो ने उकी तीन मईना वाली परीक्षा चली री थी. दायजी पे खीजी ने बोल्यो-अरे दायजी, हद कर दी तमने तो. नेठू चडलो य धर लियो. म्हारे किताब भी बाँचने दोगा कि नी ?

दायजी मीठा गुस्सा में बोल्या-थारे चड्लो लगे है, यो बाजे जदे हमारा बड़ा-बूड़ा हुण से पूछ कि हमारा पे कंय बीते है. भीतर तक कंपकंपी छूटी जाय है. कालजा में धक-धक होणे मंडी जाय है रे घिस्या.

इतरा में घिस्या की दादी बोली पड़ी-हाँ रे.. थारा दादाजी सय की रिया है. अपनी ब्याण जी के तो बापड़ी के असा चक्कर अय रिया है कि अस्पताल में भरती करानी पड़ी. तीन दन हुय ग्या पण उनका माथा की गिन्नाटी उतरी ही नी. उतरे कसे. इत्ती जोर से डीजे बाजे तो माथो चढ़ी जाय.

अरे तू तो ठाणा में जय ने रिपोट करी ने आ तो.

इतरा में बात काटती घिस्या की मम्मी अय गी, जो सरकारी स्कूल में पाँचवी तक की छोरी हुण के भणावा जाय. मास्टरनी बई बोली- ठाणा-ठाणी का काम रेणे दो तम तो. यो गणपति जी को उच्छव अपणो भी तो है. पुलिस आयगा ने डीजे बंद करायगा तो अपणे बी तो पाप लगेगा. चलने दो जसी चली रियो. यो तो लोग हुण के सोचनो चईये कि जदे अपणी सरकार ने कम आवाज़ में बजाणे को नियम निकाल्यो है तो सब के राष्ट्र धरम को पालन करनो चईये नी.

इतरी बात करने का बाद में ससुरा जी आड़ी मुंडो करी ने, अपणा कान में से रुई का डट्टा निकालती हुई बोली-म्हने तो या कान में रुई लगई रखी है. ऊपर से कान पे डूपट्टो कसी ने बाँधी लूँ. तम भी कान में रुई लगय लो, इससे इतरो हल्लो नी आय कान में.

या बात घिस्या का पापा का भी कान में पड़ी गी थी, जो अबी-अबी फेक्टरी से डिवटी करी ने आया था. वी बोल्या-दायजी डीजे-इजे की बात तो करो ज मत. इनी बात पे तो चक्कू-छुरी चली जाय है चक्कू-छुरी. लोग होण घर पे भाटा फेंके है. जो हुई रियो नी, अच्छो ही हुय रियो है. जो होयगा, अच्छो ही होयगा. कां की निवरी पंचायत करनी. भागीरथ बा से नी रेवायो. बऊ की तरफ देखता-देखता पाछा बोल्या-अरे लाड़ी, तू तो भणी-लिखी है. ग़लत बात के सेन करनो भी तो गलत को साथ देणो होय नी. कोई जुलम करे ने हम चुप बैठा रां... यो कां को न्याव है. उच्छव मनाणो है तो रातभर भजन-कीर्तन करो, कथा-प्रवचन कराव, रामलीला-नाटक करो. चिलम बजाव तो कोई के आफत नी आय. पर यो डीजे तो कान फाड़ी के धरती धुजय दे. यो कंय काम को. बाल गंगाधर तिलक जी ने तो यो उच्छव एका सारु चालू करियो थो कि सगळा लोग मिली-जुली ने मज़े से मनाव पण यां आंनद तो दूर भड-भड कूटा मगज चढ़य दे. बड़ा-बूड़ा ने नाना बालक की कोई सुनवई ज नी.

इत्ता में घिस्यो बोल्यो-..बस हुय गी तमारी पंचायत, अबे म्हारे किताब बाँचने दो. कल सवेरे तीन माही को पेपर है ने ऊ बी अंग्रेजी को. डीजे थोड़ो बंद होयो तो तमने हल्ला शुरू कर दिया. भागीरथ बा घिस्या की तरफ देखते हुए-भण रे भण घिस्या, गणपति जी सबके बुद्धि देणे वाला. वी ज आज नी तो काल इनके बुद्धि देगा कि इत्ती जोर से नी बजावे. उनकी बात भी पूरी नहीं हुई थी कि डीजे का शोर में दबी गई. डीजे पे फ़िल्मी गाणा जोर-जोर से बजी रिया था..!

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी